तीन गेंदें

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

संख्या तीन हर दिन मेरा पीछा करती थी।

हर पल।

और जब भी मुझे उसकी कम-से-कम उम्मीद होती, वह प्रकट हो जाती।

कुछ दिन पहले, जागते ही, मैंने अपने जबड़े के दाहिनी ओर नीचे एक छोटी-सी सूजन देखी।

लगभग एक गेंद के बराबर।

मेरी पत्नी ने पूछा कि यह क्या है।

मैंने उसे वही एक जवाब दिया जिसका कोई मतलब बनता था।

चूँकि मैं कुछ समय से सफ़र पर नहीं निकला था — शायद इंतज़ार के कारण, शायद ज़रूरत के कारण, शायद टेस्टोस्टेरोन के हद-से-ज़्यादा उत्पादन के कारण — एक तीसरी गेंद ने उगने का फ़ैसला कर लिया था।

और यह मैं नहीं था जिसने तय किया कि उसे कहाँ रखा जाए।

मेरी पत्नी मुस्कुराई।

उसने मुझसे कहा कि बेवकूफ़ी बंद करूँ और किसी डॉक्टर को दिखाऊँ।

पर किस तरह का डॉक्टर?

कोई सामान्य चिकित्सक?

कोई अस्पताली डॉक्टर?

कोई विशेषज्ञ?

पारिवारिक डॉक्टर को कम पता था और वह प्रयोगों के सहारे जीता जान पड़ता था।

अस्पताली डॉक्टर फटाफट हस्तक्षेपों के सहारे जीता था, बिना कुछ भी साबित करने की कोई ज़िम्मेदारी लिए।

विशेषज्ञ पैसे वसूलता था, इसलिए मेरे लिए नहीं था।

आपातकालीन चिकित्सा सेवा बुरे विकल्पों में सबसे बेहतर लगती थी।

एक महिला डॉक्टर ने दरवाज़ा खोला और पूछा कि मुझे क्या चाहिए।

मैं अब भी फाटक के बाहर ही खड़ा था।

“मुझे पता है कि फल-सब्ज़ी की दुकान बगल में ही है,” मैंने कहा, “पर क्या यह सचमुच चिकित्सा-क्लिनिक ही है?”

“हाँ। आपको क्या चाहिए?”

“दो किलो केले। अगर आप मुझे अंदर आने दें, तो मैं बता दूँगा कि कौन-सी क़िस्म।”

वह मुस्कुराई और उसने फाटक खोल दिया।

फिर उसने मेरा चेहरा और मेरी तीसरी गेंद देखी।

दस्ताने प्रकट हुए।

उस जगह की जाँच हुई।

गलसुआ को तुरंत ख़ारिज कर दिया गया।

उससे तो मैं चार साल की उम्र में ही उबर चुका था।

फ़ैसला आ गया।

एक सूजी हुई लसिका ग्रंथि।

इसकी तुरंत जाँच ज़रूरी थी।

“डॉक्टरों की गारंटीशुदा आमदनी” नाम का अभियान आधिकारिक रूप से शुरू हो चुका था।

तीन नुस्खे: एक एंटीबायोटिक। एक स्टेरॉयड। एक अल्ट्रासाउंड जाँच।

और तीन दिन बाद आगे की जाँच के लिए लौटने का वचन।

फिर उसने एक काग़ज़ उठाया और निर्देश लिखने लगी कि अल्ट्रासाउंड कैसे किया जाना चाहिए।

मैं मुस्कुराया।

“क्या आपको सचमुच यक़ीन है कि आपके सहकर्मी को यह जानने के लिए लिखित निर्देश चाहिए कि अल्ट्रासाउंड कैसे काम करता है?”

“आप सही कह रहे हैं,” उसने जवाब दिया।

फिर वह अवश्यंभावी सवाल आया।

“आप जीविका के लिए क्या करते हैं?”

“मैं एक मरीज़ हूँ।

पर अपना ज़्यादातर वक़्त मैं फल-सब्ज़ी की दुकानों में बिताता हूँ।”

मैं उठ खड़ा हुआ।

“मैं घर जा रहा हूँ।

मैं अपना इलाज लहसुन से करूँगा।

और फिर मैं आपको बता दूँगा।

आप उन चंद ख़ुशनसीबों में से हैं जो सचमुच रिटायरमेंट तक पहुँचेंगे। एक बार जब लोग इसके असर को खोज लेंगे, तो आपके कई सहकर्मियों को शायद एक नए पेशे की ज़रूरत पड़े।”

जब मैं घर पहुँचा, मेरी पत्नी प्रतीक्षा कर रही थी।

चिंतित।

वह जानना चाहती थी कि निदान क्या निकला।

मैंने उससे कहा कि चिंता न करे।

जल्द ही मैं फिर सफ़र पर होऊँगा।

और वह सूजन शायद ग़ायब हो जाएगी।

शायद हवाई जहाज़ के उतरने से भी पहले।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।